# महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

# महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः


मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

**संरक्षक-**

**श्री बंडारु दत्तात्रेय**
(महामहिम राज्यपाल)
**श्री मनोहरलाल खट्टर**
(मुख्यमंत्री हरियाणा)
**श्री कंवरपाल गुर्जर**
(माननीय शिक्षा मंत्री)

**मार्गदर्शक-**

**प्रो. बृजकिशोर कुठियाल**
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)
**प्रो. राजकुमार मित्तल**
(कुलपति)

**प्रधान सम्पादक-**

**प्रो. यशवीर सिंह**
(कुलसचिव)

**सम्पादक -**

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय

**सहसम्पादक-**

डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. नरेश शर्मा
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. शर्मिला

**छात्र सम्पादिका**

रजनी
शीतल



अंक-५
माह – जनवरी
वर्ष २०२२
विक्रमी संवत्
२०७८


*वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।*
*रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।*


ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com


MVSUOFFICIAL

mvsu.ac.in

## भारतीय सांस्कृतिक विरासत

हजारों वर्षों की भारतीय सास्कृतिक विरासत जिसने वैश्विक मानव संस्कृति को जन्म दिया। उस संस्कृति को हमारे ऋषि-मुनियों ने अपनी तप: साधना के बल पर सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक मूल्यों से अभिसिक्त किया है। जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी हजारों वर्ष पूर्व थी। भारतीय मूल्यों से युक्त जिस जीवन पद्धति को आज विश्व स्वीकार कर रहा है। वह भारतीय परम्परा ही विश्व को सुख-समृद्धि का मन्त्र दे सकती है।

समृद्धि केवल भौतिक जीवन की नहीं होती समृद्धि वह होती है जो मानव को मानवता से पूर्ण करे, समृद्धि वह है जो सुख और सन्तोष का माध्यम बने। इसीलिए भारत का सन्त समृद्ध है, जिसके समक्ष राजा भी नतमस्तक होता है। वह समृद्धि है ज्ञान की, आध्यात्म की, वह समृद्धि है मानव कल्याण की भावना की, वह समृद्धि है आत्मसन्तोष की। जहाँ सन्तोष है सर्व मंगलाकामना से युक्त जीवन शैली है वही गुरुत्व को प्राप्त होता है। इसीलिए वह गुरुत्व आज भी सर्वलक्षित है।

भारत के विषय में कहा जाता है कि भारत सोने की चिड़िया था, विश्व गुरु था। ये भारतीय चिति के अनुकूल नही है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत आज भी उसी समृद्ध परम्परा की वाहक है जो हजारों वर्ष पूर्व थी अत: भारत आज भी वैसा ही है जैसा हजारों वर्ष पूर्व था। भारत की सर्व मंगलकारी चिति आज भी उसी प्रकार की है।

***सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:*** की जीवन रचना आज भी भारतीय आत्मा का अभिन्न अंग है। अभी वैश्विक महामारी करोना काल में विश्व में भारत के उस स्वरुप के प्रत्यक्ष दर्शन किए। हमने न केवल स्वयं की रक्षा की अपितु विश्व के समस्त मानवों के लिए प्रेरणा दी कि यह सृष्टि मैं से नहीं हम से संचालित होती है। करोना रक्षक भारतीय वैक्सीन को भारत ने अपने साथ-साथ विश्व में जहां-जहां उसकी आवश्यकता थी बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध करायी। ***सर्वे सन्तु निरामया:*** का यह उदात्त भाव विश्व ने देखा। हजारो वर्षों की भारतीय संस्कृति की परम्परा यथा अवसर प्रकट होती रहती है। यह है भारत की सनातन संस्कृति जिसके विषय में हम आज चर्चा कर रहे हैं। उसका प्रेरणा स्रोत हमारा साहित्य है हमारी वैदिकी प्रज्ञा है, जो वेद,वेदांग उपनिषद पुराण, रामायण महाभारत तथा आधुनिक साहित्य के रुप में प्रवाहित है। इस प्रजा प्रवाह का स्वरूप अति व्यापक है परन्तु हम रामायण के विषय में चर्चा करेंगे। जिसका अनन्त प्रवाह भारतीय जन मानस में ही नही अपितु विश्व के समस्त प्राणियों के मानस में समाया हुआ है। जो भारत को आज भी विश्व गुरुत्व प्रदान कर रहा है।

एक बार अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिन्टन भारत आए। अपने भारत प्रवास के अवसर पर उन्होनें एक बात कही जो हम भारतीयों का सिर गर्व से उपर कर देता है। उन्होंने कहा- "भारत के पास आज भी ऐसी पूंजी है जो विश्व की समग्र सम्पदा से भारी है। वह है भारत की परिवार व्यवस्था।" पश्चिम की आधुनिकता की होड़ में जहाँ आज विश्व भीड़ में भी एकाकी जीवन जीने को मजबूर है वहीं भारतीय परिवार व्यवस्था विश्व को व्यष्टि से समृष्टि का स्वरूप प्रदान करने का मन्त्र देती है। भारत की परिवार संस्था केवल व्यष्टि तक सीमित नहीं है और समृष्टि तथा परमेष्टि तक जाती है। ***'वसुधैव कुटुम्बकम्'*** सम्पूर्ण वसुधा मेरा परिवार है। हम सब उसी परम तत्व के अंश हैं और इस नाते हम सब एक परिवार है। परिवार में त्याग, सहकार्यता, सहनशीलता सबके, सुख की कामना होती है। यह स्वरूप भारतीय ग्रन्थों में हजारों वर्षों से निबद्ध है। क्योंकि भारतीयता का शाश्वत मूलमन्त्र:-

***सर्वे भवन्तु सुखिन; सर्वे सन्तु निरामया:।***
***सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु:ख भाग्भवेत्॥***

**प्रो. राजकुमार मित्तल**
कुलपति

## सम्पादकीयम्

भारतवर्षस्य स्वाधीनताया: अमृतमहोत्सवस्य-अवसरे एकत: राष्ट्रस्य प्रगत्या: विषये समीक्षा भवति अपरञ्च भाविभारतस्य निर्माणस्य कृते चिन्तनम्। वर्षमेतत् एतदर्थमपि महत्वपूर्ण वर्तते यतोहि अस्माकं राष्ट्रस्य चिति किमस्ति एतस्य परिचय: राष्ट्रजन समवायं प्रति क्रियते। राष्ट्रचिति अवबोधनार्थं स्वामि विवेकानन्देन अखिलविश्वे भारतस्य जयघोषं कृतम्। भारतीय चिन्तनस्य, हिन्दूधर्मस्य तत्व मीमांसा वैश्विक पटले स्थापितम्। विश्वगुरुभारतं स्वर्णचटका इति नाम्ना विख्यातं भारतं किमस्ति ? वैश्विक ज्ञान-विज्ञान प्रगत्यां भारतस्य योगदानं कथमस्ति ? इति सर्वं विश्वस्य सर्वधर्मसम्मेलनस्य मञ्चे उद्घोषितम। विश्वस्य सर्वधर्माणां जननी भारतीया संस्कृति कथं श्रेष्ठा अस्ति ? आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुम्बकम् , सर्वे सन्तु निरामया, इति भावचिन्तनस्यानुसारं भारतं विश्वस्य मार्गदर्शन कुर्वन् आसीत्। हिन्दू संस्कृति: अधुनापि विश्वस्य मार्गदर्शनं करोति।

स्वामि विवेकानन्दस्य जीवनं न केवलं युवान् प्रेरयति अपितु समग्रेऽपि विश्वे ये चिन्तका: समाजोद्धारका: साधवश्च सन्ति सर्वेषां कृते आदर्शमस्ति। तस्य विश्वकल्याणिका दृष्टि: सार्वभौमिकास्ति। स्वामि विवेकानन्द: कथयति यत् भारतीया: स्व स्वत्वं अवगच्छेयु: अनेन एवं विश्वकल्याणं भवितुमर्हति। भारतस्य स्वत्वं तस्य आत्मशक्यां पुनरीक्ष्य निरन्तरं आत्मोन्नति-मार्गे पुरस्सरो भूत्वा मानवसंस्कृते: उत्थानेन एवास्ति। सा एव विश्ववस्य संस्कृति: सर्वषां सभ्यतानां जननी अस्ति।

शिक्षा विषये स: युवान् कथयति यत् येन मानवस्य जीवन उन्नतं भवति। यस्य अभ्यासेन जीवनं संयमितं भवति येन अन्त: सुप्त प्रज्ञाया: जागरणं भवति सा एव शिक्षा अस्ति। युवका: स्व लक्ष्यं प्रति निरन्तरं जागरूका: स्यु:। चरित्र निर्माणं एव शिक्षाया: प्रमुखं लक्ष्यम्।

***'उत्तिष्ठित जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'***

तेन उक्तं शिक्षया: एव मानव: सुदृढ आत्मविश्वासयुक्त: च भवति। शिक्षा एवं मानवं आत्मनिर्भरं कारयति। देशस्य प्रगत्वा: आधार: शिक्षा एवास्ति।

स: सर्वधर्मान् प्रति समभाव धारयति। तस्य मन्तव्यम् अस्ति यत् 'एकं सद् विप्रा: बहुधा वदन्ति'। जना: पृथक-पृथक मार्गेण गच्छन्ति परं तेषां गन्तव्यमेकमेव अस्ति। एदमेव भारतीय दर्शनमस्ति। अस्माकं ऋषय: कथयन्ति ***'आ नो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत: '***।

स्वामिविवेकानन्दस्य कथनमासीत् यत् छात्राणामावश्यकता अनुसारं शिक्षायां परिवर्तनंमावश्यकम् वर्तते। एकाग्रता एवं ज्ञान प्राप्ते: एकमेव मार्गम्। गुरूं प्रति विश्वास: विनयं विनम्रता च ज्ञान प्राप्ते: आधार: वर्तते। छात्रा: स्वयमेव स्वभाग्यस्य निर्माता भवन्ति। शिक्षया एव मानव: यथा इच्छति तदैव भवन्ति। गुरो: व्यक्तिगत जीवनमेव शिक्षाया: सर्वोत्तम: उपाया: शिक्षा एव मानवानां भविष्यस्य कुञ्जिका अस्ति।

स्वामि विवेकानन्दस्य समग्र जीवनम् आध्यात्मिक साधनायां शिक्षायां चातीतम्। तस्य जीवनमेव अस्माकं कृते आदर्शम् वर्तते। तस्य जीवनस्य अन्तिम लक्ष्यमासीत् भारतं पुन: विश्व गुरु: आसेन आसीनं भवेत्। एतस्य माध्यम भारतीय परम्परानुसारं शिक्षा। स: कथयति वर्तमान शिक्षा शिक्षा नास्ति एषा मानव परतन्त्रतां प्रति प्रेरयति। आत्म गौरव शून्य समाजस्य निर्माणं करोति।

**"स्वशिक्षा एवं भारतस्य भाग्य विधात्री भवितुर्महति"**

**डॉ कृष्ण चन्द पाण्डे**
सम्पादक

# राष्ट्र संरक्षण एवं उन्नति के आवश्यक गुण

किसी भी राष्ट्र में स्वराज्य की प्राप्ति मात्र होने से यह नहीं कहा जा सकता कि उसके संरक्षण व उन्नति की योग्यता उसने प्राप्त कर ली है स्वराज्य प्राप्ति मात्र से राष्ट्र का संरक्षण एवं संवर्धन कदापि सम्भव नही है उसके रक्षण व उन्नति के लिए कुछ जीवन्त तत्त्व आवश्यक है जिनके अभाव में किसी भी राष्ट्र का संरक्षण एवं उन्नति सम्भव नही है।

हमारे शास्त्रों में राष्ट्र रक्षण एवं उन्नति के लिए आवश्यक तत्त्वो का विस्तार से वर्णन मिलता है। अथर्ववेद में एक मन्त्र के माध्यम से इन तत्त्वों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है मन्त्र में उपदेश दिया गया है –

*सत्यं वृहत् ऋतं उग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथ्वीं धारयन्ति।*
*सा नो भूतस्य भाव्यस्य पत्नी उकं लोकं पृथ्वी नः कृणोतु॥*

*(अथर्ववेद 12.1.1)*

अर्थात् सत्य वृहत् भाव (व्यापक दृष्टिकोण) सरलता, उग्रता, दक्षता, शीतोष्ण सहन करने की शक्ति ब्रह्मज्ञान और यज्ञ यह तत्त्व मातृभूमि को धारण करते है। यह हमारी भूत, वर्तमान और भविष्य का पालन करने वाली हमारे लिए विस्तृत कार्यक्षेत्र प्रदान करे।

मातृभूमि के संरक्षण के लिए मन्त्र में आठ सदगुणों का वर्णन मिलता है। राष्ट्र की उन्नति चाहने वाले व्यक्ति में ये सदगुण आवश्यक है। अन्यथा वह राष्ट्र रक्षा व उन्नति में समर्थ नही है इन तत्वों के अभाव में राष्ट्रोन्नति की मात्र कल्पना ही की जा सकती है। जिस राष्ट्र में यह आठ सदगुण (तत्व) विद्यमान होगें वह राष्ट्र निरन्तर उन्नति करेगा और संरक्षित रहेगा।

**1. सत्य -** प्रथम राष्ट्र रक्षक गुण है सत्य। सत्य के बिना राष्ट्र रक्षण सम्भव नही है। राष्ट्र के मनुष्यों में चाहिए कि उनके आचार-विचार व व्यवहार में सत्यता हो। सत्य आचार-विचार से ही उत्तम व्यवहार सम्भव है उत्तम व्यवहार से राष्ट्र का रक्षण होता है।

**2. वृहत् (व्यापकता) -** द्वितीय गुण है वृहद् भाव। मनुष्य को मनुष्य के प्रति व्यापक दृष्टिकोण रखना चाहिए। संकुचित मन वाला व्यक्ति अपने मन में कभी भी सदविचारों को नही पनपा सकता। इसलिए हमारे पूर्वजों ने वसुधैव कुटुम्बकम् का व्यापक विचार दिया। हमें मानव मात्र के प्रति व्यापक दृष्टिकोण रखना चाहिए। ***"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"*** यह विशाल भाव ही राष्ट्र रक्षा कर सकता है। अपनी जाति मात्र की उन्नति चाहने वाला, अपने क्षेत्र विशेष की ही उन्नति चाहने वाला, अपने कुटुम्ब का ही भला चाहने वाला, व्यक्ति कभी भी राष्ट्र के संरक्षण का व्यापक भाव मन में नही रख सकता और न ही राष्ट्र का भला कर सकता है। अतः राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यापक दृष्टिकोण होना चाहिए। वृहद् भाव वाला व्यक्ति ही राष्ट्र की सर्व प्रकार उन्नति कर सकता है।

**3. सरलता -** राष्ट्रोन्नति व राष्ट्र रक्षण चाहने वाले व्यक्ति के मन में सरलता होनी चाहिए। निष्कपट भाव मन में होना चाहिए। जीवन मे सादगी, छलकपट रहित भाव से ही उत्तम व्यवहार आता है। उत्तम व्यवहार होने से राष्ट्र का यश बढ़ता है। सरल स्वभाव से सभी के प्रति समभाव निर्माण होता है जो राष्ट्र रक्षा के लिए आवश्यक है।

**4. उग्रता -** राष्ट्र रक्षण के लिए सरलता के साथ-साथ उग्रता भी आवश्यक है। उग्रता, वीरता, शौर्य, धैर्य और युद्ध का सामर्थ्य यह सभी गुण राष्ट्र रक्षण के आवश्यक तत्व है। इसी भाव को अपराजेय शक्ति कहा गया है। हम किसी पर आक्रमण नही करेंगें परन्तु यदि कोई राष्ट्र पर तिरछी दृष्टि रखता है तो उसे सबक सिखाने का सामर्थ्य होना चाहिए। उग्रता क्षात्र धर्म है राष्ट्र रक्षा के लिए क्षत्रिय भाव होना आवश्यक है उग्रता क्षत्रिय का गुण है राष्ट्र रक्षा के लिए क्षत्रिय भाव भी आवश्यक माना गया है। राष्ट्र रक्षा के लिए क्षत्रिय भाव का विशेष महत्व है।

**5. दक्षता -** किसी भी राष्ट्र के संरक्षण के लिए राष्ट्र के लोगों में दक्षता का होना आवश्यक है। दक्षता का अर्थ है सावधानता। प्रत्येक क्षण सावधान रहना दक्षता है। राष्ट्र जीवन के समस्त कार्य दक्षता पूर्ण व निर्दोषिता से सम्पन्न करना चाहिए। शिथिलता व असावधानी पूर्ण करने से कोई भी कार्य उचित रीति से नही किया जा सकता। परिणामतः देश रक्षा सम्यक् प्रकार से संभव नही हो सकता। अतः मातृभूमि के रक्षक नागरिक को दक्ष होना आवश्यक है।

**6. तप -** (शीतोष्ण सहन करने की क्षमता) सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय समस्त स्थितियों में जो समभाव रखता है अर्थात् समान रहता है। सभी प्रकार के द्वन्द्वों व कष्टो में उत्साह पूर्ण ढंग से अपना कार्य सम्पन्न करता है। वही व्यक्ति राष्ट्र कार्य में सफल हो सकता है। जो व्यक्ति छोटे-छोटे आघातों से विचलित हो जाता है। शीत लगने पर ज्वर से पीडित तथा उष्णता में शिरोवेदना से पीडित हो जाता है। ऐसा व्यक्ति राष्ट्र का रक्षण कभी नही कर सकता। सभी प्रकार की अवस्थाओं मे जो दृढ़ रहता है वही राष्ट्र का संरक्षण कर सकता है।

**7. ज्ञान -** ज्ञान और विज्ञान मानव उन्नति के लिए आवश्यक है। ज्ञान और विज्ञान के बिना मनुष्य अन्धा है। विज्ञान से भौतिक सुखों में वृद्धि तथा आत्मज्ञान से मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह स्वयं को ज्ञान और विज्ञान से समन्वित करे। राष्ट्र की उन्नति के लिए ज्ञान और विज्ञान दोनो सम परिमाण में रहने चाहिए। यदि देश में विज्ञान बढेगा और आध्यात्मिकता (ज्ञान) कम होगी तो नास्तिकता बढेगी। भौतिक सुख बढेंगे और आत्मिक अशान्ति उत्पन्न होगी। यदि देश केवल आत्मज्ञान बढेगा तथा विज्ञान की ओर ध्यान नही रहेगा तो निष्क्रियता बढेगी तथा देश मे भौतिक सुखो कि परि समाप्ति होगी। अतः राष्ट्र की उन्नति के लिए ज्ञान और विज्ञान दोनों का सम मात्रा में विकास आवश्यक है। इसी को हमारे ऋषियों ने ब्रह्मज्ञान कहा है। अर्थात ज्ञान और विज्ञान का समन्वय ही ब्रह्मज्ञान कहलाता है। भारत मे आत्मज्ञान अधिक होने के कारण निष्क्रियता है तथा यूरोप में विज्ञान की अधिकता के कारण नास्तिकता है। इसलिए दोनों स्थितियाँ हानि कारक है। इसलिए राष्ट्र की उन्नति के लिए ज्ञान और विज्ञान दोनों का समन्वय आवश्यक है।

**8. यज्ञ-** श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करना, आपस में मिलजुल कर रहना तथा दोनो की उन्नति या कल्याण के लिए कार्य करना यह तीनो कार्य यज्ञ के अन्तर्गत आते है। राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक है। अपने महापुरुषों का सम्मान किया जाये जिससे उनसे प्रेरणा लेकर अपनी मातृभूमि को और अधिक उन्नत किया जा सके। साथ ही आपस में संगठन भी आवश्यक है। संगठन के बिना कोई भी राष्ट्र उन्नति नही कर सकता। जिस राष्ट्र में संगठन नही होता वह बिखर जाता है। वह टूट जाता है। उसकी उन्नति का तो सोचा भी नही जा सकता। अतः राष्ट्र की उन्नति के लिए संगठन आवश्यक है। संगठन के कारण से सभी को एक दूसरे की उन्नति का विचार प्रबल होता है। सभी जब एक दूसरे की उन्नति का विचार करते है तो राष्ट्रभाव स्वाभाविक रूप से प्रबल होता है परिणामतः राष्ट्र की उन्नति का विचार सभी के मन में प्रबल हो उठता है। इसी भाव से राष्ट्र की तथा स्व की उन्नति होती है। इसलिए राष्ट्र उन्नति के लिए यज्ञ रूपी गुण होना आवश्यक है। राष्ट्र के लिए सर्वस्य समर्पण का भाव ही यज्ञ है। यही समर्पण का भाव समस्त मानवों के कल्याण का विचार प्रबल करता है। दीनों की दीनता को दूर करने का भाव जागता है। सभी प्रकार की दीनता देश से दूर हो यह भाव बलवान होता है परिणामतः उसे अपनी समस्त क्रिया में राष्ट्र उन्नति का भाव सर्वोपरि रखता है।

मातृभूमि के संरक्षण के लिए इन आठ गुणों का होना आवश्यक है इनके अभाव में कोई भी राष्ट्र उन्नति नही कर सकता। हमारे राष्ट्र की अवनति का यही कारण है। सर्वत्र स्वार्थ परता व्यक्तिगत जीवन जीने का भाव राष्ट्र की उन्नति के लिए बताये गये समस्त गुणों का अभाव ही हमारे राष्ट्र की उन्नति के लिए जो आवश्यक है। उन सभी गुणों का विकास प्रत्येक स्तर पर होना चाहिए। इसी से उन्नत समाज का निर्माण सम्भव है। इसी से समाज व राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। यही मार्ग है राष्ट्र की उन्नति का।

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे
सहायक आचार्य (साहित्य)

## सांस्कृतिक अभिज्ञान के केन्द्र

*अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका।*
*पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका:॥*

(अर्थ : अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, काञ्चीपुरम, उज्जैन, और द्वारिका - ये सात पुरियाँ नगर मोक्षदायी हैं। )

### अयोध्या

अथर्ववेद में यौगिक प्रतीक के रूप में अयोध्या का उल्लेख है-

*अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।*
*तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः॥*
*(अथर्ववेद-१०.२.३१)*

यह पुरी (अयोध्या) सरयू के तट पर बारह योजन (लगभग १४४ कि.मी) लम्बाई और तीन योजन (लगभग ३६ कि.मी.) चौड़ाई में बसी थी। कई शताब्दी तक यह नगर सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी रहा। अयोध्या मूल रूप से हिंदू मंदिरो का शहर है। भारत के राज्य उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले का एक नगर और जिले का मुख्यालय है।

सरयू नदी के तट पर बसा अयोध्या एक अति प्राचीन धार्मिक नगर है। मान्यता है कि इस नगर को मनु ने बसाया था और इसे 'अयोध्या' का नाम दिया जिसका अर्थ होता है अ-युध्य अर्थात् 'जहां कभी युद्ध नहीं होता। 'इसे 'कौशल देश' भी कहा जाता था। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार अयोध्या मे सूर्यवंशी/रघुवंशी राजाओं का राज हुआ करता था, जिसमे भगवान श्री राम ने अवतार लिया था। यहाँ पर सातवीं शाताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग आया था। उसके अनुसार यहाँ 20 बौद्ध मंदिर थे तथा 3000 भिक्षु रहते थे। यह सप्त पुरियों में से एक है-

### मथुरा

मथुरा शहर भारत के उत्तरप्रदेश प्रान्त के मथुरा जिले का एक शहर है। मथुरा ऐतिहासिक रूप से कनिष्क वंश द्वारा स्थापित नगर है। आज यह धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। मथुरा भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का केंद्र रहा है। भारतीय धर्म, दर्शन कला एवं साहित्य के निर्माण तथा विकास में मथुरा का महत्त्वपूर्ण योगदान सदा से रहा है।

आज भी महाकवि सूरदास, संगीत के आचार्य स्वामी हरिदास, स्वामी दयानंद के गुरु स्वामी विरजानंद, कवि रसखान आदि से इस नगरी का नाम जुड़ा हुआ है। मथुरा का इतिहास करीब 2500 साल पुराना है। इस शहर को बृज भूमि के रूप में भी जाना जाता है, मथुरा वो जगह है जहाँ श्री कृष्ण ने जन्म लिया था और जहां उन्होंने अपना बचपन बिताया था। मथुरा इतना प्राचीन शहर है कि इसका उल्लेख हिंदू महाकाव्य रामायण में और अलेक्जेंड्रियन खगोलशास्त्री टॉलेमी के लेखों में भी मिलता है।

### माया (हरिद्वार)

हरिद्वार तीर्थ के रूप में बहुत प्राचीन तीर्थ है परंतु नगर के रूप में यह बहुत प्राचीन नहीं है। हरिद्वार नाम भी उत्तर पौराणिक काल में ही प्रचलित हुआ है। महाभारत में इसे केवल 'गंगाद्वार' ही कहा गया है। पुराणों में इसे गंगाद्वार, मायाक्षेत्र, मायातीर्थ, सप्तस्रोत तथा कुब्जाम्रक के नाम से वर्णित किया गया है।

प्राचीन काल में कपिलमुनि के नाम पर इसे 'कपिला' भी कहा जाता था। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ कपिल मुनि का तपोवन था।पौराणिक कथाओं के अनुसार भगीरथ ने, जो सूर्यवंशी राजा सगर के प्रपौत्र (श्रीराम के एक पूर्वज) थे, गंगाजी को सतयुग में वर्षो की तपस्या के पश्चात् अपने ६०,००० पूर्वजों के उद्धार और कपिल ऋषि के शाप से मुक्त करने के लिए के लिए पृथ्वी पर लाया। 'हरिद्वार' नाम का संभवतः प्रथम प्रयोग पद्मपुराण में हुआ है।

पद्मपुराण के उत्तर खंड में गंगा-अवतरण के उपरोक्त प्रसंग में हरिद्वार की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए उसके सर्वश्रेष्ठ तीर्थ होने की बात कही गयी है। यह स्थान बड़ा रमणीक है और यहाँ की गंगा हिन्दुओं द्वारा बहुत पवित्र मानी जाती है। कतिपय प्रमुख पुराणों में हरिद्वार, प्रयाग तथा गंगासागर में गंगा की सर्वाधिक महिमा बतायी गयी है:-

*सर्वत्र सुलभा गंगा त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा।*
*गंगाद्वारे प्रयागे च गंगासागरसंगमे।*
*तत्र स्नात्वा दिवं यान्ति ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः॥*

अर्थात् गंगा सर्वत्र तो सुलभ है परंतु गंगाद्वार (प्रयाग और गंगासागर-संगम में दुर्लभ मानी गयी है। इन स्थानों पर स्नान करने से मनुष्य स्वर्ग लोक को चले जाते हैं और जो यहां शरीर त्याग करते हैं उनका तो पुनर्जन्म होता ही नहीं अर्थात् वे मुक्त हो जाते हैं।

### काशी

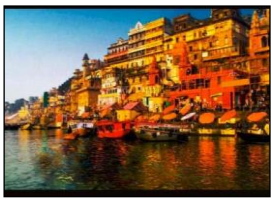

हरिवंशपुराण के अनुसार काशी को बसानेवाले भरतवंशी राजा 'काश' थे। कुछ विद्वानों के मत में काशी वैदिक काल से भी पूर्व की नगरी है। शिव की उपासना का प्राचीनतम केंद्र होने के कारण ही इस धारणा का जन्म हुआ जान पड़ता है; क्योंकि सामान्य रूप से शिवोपासना को पूर्ववैदिककालीन माना जाता है। वैसे, काशी जनपद के निवासियों का सर्वप्रथम उल्लेख हमें अर्थववेद की पैप्पलादसंहिता में (५, २२, १४) मिलता है। शुक्लयजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में (१३५, ४, १९) काशिराज धृतराष्ट्र का उल्लेख है जिसे शतानीक सत्राजित् ने पराजित किया था।

बृहदारण्यकोपनिषद् में (२, १, १, ३, ८, २) काशिराज अजातशत्रु का भी उल्लेख है। कौषीतकी उपनिषद् (४, १) और बौधायन श्रौतसूत्र में काशी और विदेह तथा गोपथ ब्राह्मण में काशी और कोसल जनपदों का साथ-साथ वर्णन है। इसी प्रकार काशी, कोसल और विदेह के सामान्य पुरोहित जलजातूकर्ण्य का नाम शांखायन श्रौतसूत्र में प्राप्य है। काशी जनपद की प्राचीनता तथा इसकी स्थिति इन उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट हो जाती है। वाल्मीकि रामायण में (किष्किंधा कांड ४०, २२) सुग्रीव द्वारा वानरसेना को पूर्वदिशा की ओर भेजे जाने के संदर्भ में काशी और कोसल जनपद के निवासियों का एक साथ उल्लेख किया गया है –

*महीं कालमहीं चापि शैलकानन शोभिंता।*
*ब्रह्ममालन्विदेहांश्च मालवान्काशिक सलान्।*

महाभारत में काशी जनपद के अनेक उल्लेख हैं और काशिराज की कन्याओं के भीष्म द्वारा अपहरण की कथा तो सर्वविदित ही है (आदि पूर्व, अध्याय १०२)। महाभारत के युद्ध में काशिराज ने पांडवों का साथ दिया था।

बौद्ध काल में, गौतम बुद्ध के जन्म के पूर्व तथा उनके समय में काशी को बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हो चुकी थी। अंगुत्तरनिकाय में काशी की भारत के १६ महाजनपदों में गणना की गई है। जातक कथाओं में काशी जनपद का अनेक बार उल्लेख आया है, जिससे ज्ञात होता है कि काशी उस समय विद्या तथा व्यापार दोनों का ही केंद्र थी।

### काञ्ची

पुराणों में कहा गया है कि"पुष्पेषु जाति, पुरुषेषु विष्णुः, नारीषु रम्भा, नगरेषु कांची"कांचीपुकांची, भारत के तमिलनाडु राज्य का एक नगरमहापालिका क्षेत्र है। ऐसा माना जाता है कि जो भी यहाँ जाता है, उसे आंतरिक आनंद के साथ-साथ मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। मोक्षदायिनी सप्त पुरियों अयोध्या, मथुरा, द्वारका, माया (हरिद्वार), काशी और अवन्तिका (उज्जैन) में कांचीपुरम की भी गणना है। कांची हरिहरात्मक पुरी है। इसके दो भाग शिवकांची और विष्णुकांची हैं।: यह पलार नदी के किनारे स्थित यह नगर अपनी रेशमी साडियों एवं मन्दिरों के लिये प्रसिद्ध है।

### अवन्तिका (उज्जैन)

अवंतिका अथवा 'अवंति' प्राचीन समय में भारत के सोलह महाजनपदों में से एक था। यह जनपद उत्तर एवं दक्षिण दो भागों में विभक्त था।उत्तरी भाग की राजधानी उज्जयिनी तथा दक्षिणी भाग की राजधानी महिष्मति थी। उस समय चंद्रप्रद्योत नाम का राजा यहाँ सिंहासन पर आरूढ़ था। प्रद्योत राजा के वंशजों का उज्जयिनी पर लगभग ईसा की तीसरी शताब्दी तक शासन रहा था। अवंतिका के अन्य प्राचीन प्रचलित नाम हैं- 'उज्जैन', 'उज्जैयिनी', 'कनकश्रन्गा' आदि। प्राचीन समय में अवंतिका, उज्जयिनी, विशाला, प्रतिकल्पा, कुमुदवती, स्वर्णशृंगा, अमरावती आदि अनेक नामों से जाना जाने वाला नगर ही आज उज्जैन के नाम से प्रसिद्ध है।

सभ्यता के उदय से ही यह नगर भारत के प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में जाना गया है। पवित्र क्षिप्रा नदी के दाहिने तट पर स्थित इस नगर को भारत की 'सप्तपुरियों' में से एक माना जाता है।

**डॉ. मदन मोहन तिवारी**
सहायक आचार्य (वेद)

## महाभारतामृतम्

**धनेन जयते लोकावुभौ परमिमं तथा।**
**सत्यं च धर्मवचनं यथा नास्त्यधनस्तथा॥**

**(शान्तिपर्व ३५/१६)**

नैतिकता पूर्वक पुरुषार्थ द्वारा अर्जित धन के माध्यम से परोपकार, सेवा एवं उसके उचित सदुपयोग से मनुष्य इहलोक और परलोक दोनों पर विजय पाता है। इसके अतिरिक्त वह अपने जीवन में सत्य एवं धर्म को भी प्रस्थापित कर लेता है परन्तु निर्धन को इन कार्यों में वैसी सफलता नहीं मिलती। उसका अस्तित्व न के बराबर होता है। इसीलिए कौटिल्य अर्थशास्त्र में आचार्य चाणक्य ने लिखा है कि 'दरिद्रता साक्षात नर्क है'।

**राजा राष्ट्रं यथाऽऽपत्सु द्रव्यौघैरपि रक्षति।**
**राष्ट्रेण राजा व्यसने रक्षितव्यस्तथा भवेत्॥**

**कोशं दण्डं बलं मित्रं यदन्यदपि संचितम्।**
**न कुर्वीतान्तरं राष्ट्रे राजा परिगतः क्षुधा।**
**बीजं भक्तेन सम्पाद्यमिति धर्मविदो विदुः॥**

**(शान्तिपर्व ३५/१२-१३)**

जिस प्रकार प्रजा पर आपत्ति आने पर राजा अपने राज्य में संचित धन राशि को लुटाकर भी उसकी रक्षा करता है, उसी प्रकार राजा पर संकट आने पर राष्ट्र की प्रजा को भी उसकी रक्षा करनी चाहिए।

राजा भूख से पीड़ित होने पर भी अर्थात् शासक आपत्तिकाल में भी कोष, राजदण्ड यानि सामविधान, सेना, मित्र और अन्य सञ्चित साधनों को कभी राज्य से दूर न करे अर्थात् शासक अपने निजी स्वार्थ के लिए इनका दुरुपयोग न करें, क्योंकि धर्म को जानने वाले पुरुषों का कथन है कि मनुष्य को अपने भोजन के लिए संगृहीत अन्न में से भी बीज के लिए बचाकर रखना चाहिए।

**परस्परं हि संरक्षा राज्ञा राष्ट्रेण चापदि।**
**नित्यमेव हि कर्तव्या एष धर्मः सनातनः॥**

**(शान्तिपर्व ३५/११)**

राष्ट्रीय संकट के समय में राजा और प्रजा को निरन्तर एक दूसरे की रक्षा करनी चाहिए अर्थात् शासक का परम कर्तव्य है कि राष्ट्रीय संकट में वह अपने राष्ट्र तथा नागरिक दोनों को संरक्षित रखें और प्रजा अपने शासक का निरन्तर सहयोग करे, यही सत्य सनातन प्राचीन धर्म है।

**ये न मानित्वमिच्छन्ति मानयन्ति च ये परान्।**
**मान्यमानान् नमस्यन्ति दुर्गाण्यतितरन्ति ते॥**

**(शान्तिपर्व ३२/१३)**

जो मनुष्य दूसरों से सम्मान की अपेक्षा नहीं रखते परन्तु स्वयं ही दूसरों का सम्मान करने में आनंदित होते हैं एवं जो सम्माननीय जनों को श्रद्धा पूर्वक नमस्कार करते हैं, वे भीषण कष्टों से छूट जाते हैं।

**कर्माण्यकुहकायार्णिनि येषां वाचश्च सूनृताः।**
**येषामर्थाश्च सम्बद्धा दुर्गाण्यतितरन्ति ते॥**

**(शान्तिपर्व ३४/१०)**

जिन मनुष्यों के शुभकर्म दिखावे एवं प्रचार के लिए नहीं होते, जो सदा मधुर वचन बोलते हैं तथा जिनका धन एवं सामर्थ्य सत्कर्मों में व्यय होता है, वे भीषण कष्टों से पार हो जाते हैं।

**यात्रार्थं भोजनं येषां सन्तानार्थं च मैथुनम्।**
**वाक्सत्यवचनार्थाय दुर्गाण्यतितरन्ति ते॥**

**(शान्तिपर्व ३२/१५)**

जिस मनुष्य का भोजन स्वाद के लिए न होकर जीवन यात्रा के निर्वाह के लिए होता है, जो विषय-वासना की तृप्ति के लिए नहीं अपितु सन्तान की इच्छा से मैथुन में प्रवृत्त होते हैं और जिनकी वाणी केवल सत्य बोलने के लिए है, वे समस्त दुःखों से छूट जाते हैं।

**डॉ.नवीनशर्मा**
**सहायकाचार्य (ज्योतिष विभाग)**

## त्वं रक्तं देहि स्वातन्त्र्यमहं ददामि

देहि मह्यं स्वरक्तं ददामीह ते
देशमेनं स्वतन्त्रं सुनिश्चप्रचम्।
जायतां नैजतन्त्रैस्सदैवान्वितं
बन्धमुक्तं स्वतन्त्रं प्रियं भारतम्॥

ज्ञानिभिर्ज्ञानदानेन यत्पोषितं
त्यागिभिस्त्यागपुञ्जैस्सदा रक्षितं
सैनिकैः घोरदुःखं च सोढ्वा तपः
सेवितं पोषितं पूजितं
मोदितंपारतन्त्र्यप्रपाशेऽस्ति बद्धं पुनः
सात्विकं सुन्दरं नश्शिवं भारतम्।

देहि मह्यं स्वरक्तं ददामीह ते
देशमेनं स्वतन्त्रं सुनिश्चप्रचम्।
जायतां नैजतन्त्रैस्सदैवान्वितं
बन्धमुक्तं स्वतन्त्रं प्रियं भारतम्॥

काननैः पर्वतैर्निर्झरैश्शोभितं
रामकृष्णादिदेवावतारैर्भरं
साधुसंन्यासिसन्तैर्गुणज्ञैर्युतं
योगिभिस्त्यागिभिर्धर्मिभिर्धारित्
मानिभिर्ज्ञानिभिर्दानिभिर्वन्दितं
नेतृवर्यैश्च तज्जायते वञ्चितम्॥

देहि मह्यं स्वरक्तं ददामीह ते
देशमेनं स्वतन्त्रं सुनिश्चप्रचम्।
जायतां नैजतन्त्रैस्सदैवान्वितं
बन्धमुक्तं स्वतन्त्रं प्रियं भारतम्॥

अद्य निर्वाचने चागते नम्रतां
दर्शयन्तीह ते नेतृपुत्रास्समे
नम्रसद्भाषणैः नैजसम्भाषणैर्
मोहयन्ति प्रिया निश्छलाश्च प्रजा
नैव तेभ्यो मतं दीयतां केनचिद्
अद्य संकल्पमेनं प्रकुर्मो वयम्।

देहि मह्यं स्वरक्तं ददामीह ते
देशमेनं स्वतन्त्रं सुनिश्चप्रचम्।
जायतां नैजतन्त्रैस्सदैवान्वितं
बन्धमुक्तं स्वतन्त्रं प्रियं भारतम्॥

वाममार्गान्विता दुर्जना नित्यशः
संस्कृतं संस्कृतिं ह्रासयन्तीह हा!
धर्मनाशे रताः दुष्टकर्मप्रियाः
पश्चिमीं सभ्यतां सारयन्त्यप्रियाः
तद्विचारानहो कर्तयामो वयं
धर्मनिष्ठं भवेत्सुन्दरं भारतम्।

देहि मह्यं स्वरक्तं ददामीह ते
देशमेनं स्वतन्त्रं सुनिश्चप्रचम्।
जायतां नैजतन्त्रैस्सदैवान्वितं
बन्धमुक्तं स्वतन्त्रं प्रियं भारतम्॥

**डॉ.शशिकान्ततिवारी**
सहायक आचार्य (दर्शनविभाग)

## प्रश्नमञ्जरी

### गीता प्रश्नोत्तरी

(१) श्रीमद्भगवद्गीता कि ग्रन्थ का अंश है ?
(क) वेद (ख) महाभारत (ग) ब्रह्मपुत्र (घ) उपनिषद

(२) भगवद्गीता के तीसरे अध्याय का नाम क्या है ?
(क) सांख्ययोग (ख)कर्मयोग (ग) भक्तियोग (घ) विभूतियोग।

(३) भगवद्गीता के पहले अध्याय का नाम क्या है ?
(क) विभूतियोग (ख) कर्मयोग
(ग) अर्जुनविषादयोग (घ) आत्मसंयमयोग।

(४) भगवद्गीता में कुछ श्लोक कितने हैं ?
(क) 590 (ख)700 (ग) 800 (घ) 520

(५) भगवद्गीता की उद्गम भूमि है।
(क) अयोध्या (ख) कुरुक्षेत्र (ग) पानीपत (घ) बक्सर

(६) विभूतियोग में श्रीकृष्ण अपने को कौन सा कवि कहते हैं ?
(क) वाल्मीकि (ख) कालिदास (ग) उशना (घ) बाणभट्ट

(७) गीता में संजय द्वारा कुल कितने श्लोक बोले गए हैं ?
(क) 28 (ख) 41 (ग) 78 (घ) 39

(८) यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि ग्लानिर्भवति भारत श्लोक भगवद्गीता के किस अध्याय की है ?
(क) 4 (ख) 7 (ग) 6 (घ) 5

(९) भगवद्गीता में कुछ कितने अध्याय हैं ?
(क)15 (ख)14 (ग) 18 (घ) 28

(१०) भगवद्गीता में पाञ्चजन्य क्या है ?
(क) रथ (ख) अश्व (ग) शंख (घ) नगाड़ा

**(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)**

### (चतुर्थङ्कस्य उत्तराणि)

(1) पतञ्जलि (2) 3 (3) सांख्य (4) जैमिनी (5) गौतमः
(6) वादरायण (7) कपिल (8) नागार्जुन (9) ईश्वर कृष्ण (10) वेदः

## व्यवहारवाक्यानि

| | | |
|---|---|---|
| १. | मेरे मित्र ने पुस्तक पढ़ी। | मम मित्रं पुस्तकम् अपठत्। |
| २. | वे घर जाऐंगे। | ते गृहं गमिष्यन्ति। |
| ३. | तुम जल्दी घर जाओ। | त्वं शीघ्रं गृहं गच्छ। |
| ४. | हम सब जाते हैं। | वयं गच्छामः। |
| ५. | सच और मीठा बोलो। | सत्यं मधुरं च वद। |
| ६. | शीतल माला धारण करती है। | शीतल मालां धारयति। |
| ७. | सदाचार से विश्वास बढ़ता है। | सदाचारेण विश्वासं वर्धति। |
| ८. | मैं भोपाल जाऊँगा। | अहं भोपालं गमिष्यामि। |
| ९. | हम सब पढ़ते है। | वयं पठामः। |
| १०. | देशभक्त निर्भीक होते है। | देशभक्ताः निर्भीकाः भवन्ति। |

## गंगा जल खराब क्यों नहीं होता?

अमेरिका में एक लीटर गंगाजल 250 डालर में क्यों मिलता है? सर्दी के मौसम में कई बार खांसी हो जाती है। तो जब डॉक्टर से खांसी ठीक नही हुई तो किसी ने बताया कि डाक्टर से खांसी ठीक नहीं होती तब गंगाजल पिलाना चाहिए।

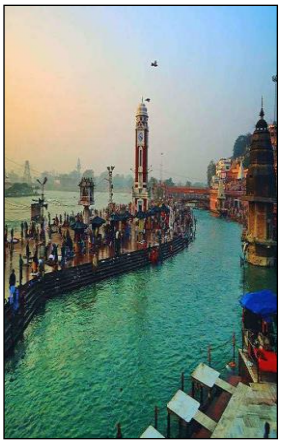

गंगाजल तो मरते हुए व्यक्ति के मुंह में डाला जाता है, हमने तो ऐसा सुना है तो डॉक्टर साहिब बोले, नहीं कई रोगों का भी इलाज है। दिन में तीन बार दो-दो चम्मच गंगाजल पिया और तीन दिन में खांसी ठीक हो गई। यह अनुभव है, हम इसे गंगाजल का चमत्कार नहीं मानते, उसके औषधीय गुणों का प्रमाण मानते हैं।कई इतिहासकार बताते हैं कि सम्राट अकबर स्वयं तो गंगा जल का सेवन करते ही थे, मेहमानों को भी गंगा जल पिलाते थे। इतिहासकार लिखते हैं कि अंग्रेज जब कलकत्ता से वापस इंग्लैंड जाते थे, तो पीने के लिए जहाज में गंगा का पानी ले जाते थे, क्योंकि वह सड़ता नहीं था। इसके विपरीत अंग्रेज जो पानी अपने देश से लाते थे वह रास्ते में ही सड़ जाता था।करीब सवा सौ साल पहले आगरा में तैनात ब्रिटिश डाक्टर एमई हॉकिन ने वैज्ञानिक परीक्षण से सिद्ध किया था कि हैजे का बैक्टीरिया गंगा के पानी में डालने पर कुछ ही देर में मर गया। दिलचस्प ये है कि इस समय भी वैज्ञानिक पाते हैं कि गंगा में बैक्टीरिया को मारने की गजब की क्षमता है।

लखनऊ के नेशनल बोटैनिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट एनबीआरआई के निदेशक डॉक्टर चंद्र शेखर नौटियाल ने एक अनुसंधान में प्रमाणित किया है कि गंगा के पानी में बीमारी पैदा करने वाले ई कोलाई बैक्टीरिया को मारने की क्षमता बरकरार है। डॉ नौटियाल का इस विषय में कहना है कि गंगा जल में यह शक्ति गंगोत्री और हिमालय से आती है। गंगा जब हिमालय से आती है तो कई तरह की मिट्टी, कई तरह के खनिज, कई तरह की जड़ी बूटियों से मिलती मिलाती है। कुल मिलाकर कुछ ऐसा मिश्रण बनता जिसे हम अभी तक नहीं समझ पाए हैं।डॉक्टर नौटियाल ने परीक्षण के लिए तीन तरह का गंगा जल लिया था। उन्होंने तीनों तरह के गंगा जल में ई-कोलाई बैक्टीरिया डाला। नौटियाल ने पाया कि ताजे गंगा पानी में बैक्टीरिया तीन दिन जीवित रहा, आठ दिन पुराने पानी में एक हफ्ते और सोलह साल पुराने पानी में 15 दिन। यानी तीनों तरह के गंगा जल में ई कोलाई बैक्टीरिया जीवित नहीं रह पाया।

वैज्ञानिक कहते हैं कि गंगा के पानी में बैक्टीरिया को खाने वाले बैक्टीरियोफाज वायरस होते हैं। ये वायरस बैक्टीरिया की तादाद बढ़ते ही सक्रिय होते हैं और बैक्टीरिया को मारने के बाद फिर छिप जाते हैं। मगर सबसे महत्वपूर्ण सवाल इस बात की पहचान करना है कि गंगा के पानी में रोगाणुओं को मारने की यह अद्भुत क्षमता कहाँ से आती है ? दूसरी ओर एक लंबे अरसे से गंगा पर शोध करने वाले आईआईटी रुड़की में पर्यावरण विज्ञान के रिटायर्ड प्रोफेसर देवेंद्र स्वरुप भार्गव का कहना है कि गंगा को साफ रखने वाला यह तत्व गंगा की तलहटी में ही सब जगह मौजूद है। डाक्टर भार्गव कहते हैं कि गंगा के पानी में वातावरण से आक्सीजन सोखने की अद्भुत क्षमता है।

भार्गव का कहना है कि दूसरी नदियों के मुकाबले गंगा में सड़ने वाली गंदगी को हजम करने की क्षमता 15 से 20 गुना ज्यादा है। गंगा माता इसलिए है कि गंगाजल अमृत है, इसलिए उसमें मुर्दे, या शव की राख और अस्थियां विसर्जित नहीं करनी चाहिए, क्योंकि मोक्ष कर्मो के आधार पर मिलता है। भगवान इतना अन्यायकारी व अत्याचारी नहीं हो सकता कि किसी लालच या कर्मकांड से कोई गुनाह माफ कर देगा। जैसी करनी वैसी भरनी ! जब तक अंग्रेज किसी बात को प्रमाणित नहीं करते तब तक भारतीय लोग सत्य नहीं मानते, भारतीय लोग हमारे सनातन ग्रन्थों में लिखी किसी भी बात को तब तक सत्य नहीं मानेंगे जब तक की कोई विदेशी वैज्ञानिक या विदेशी संस्था उस बात की सत्यता की पुष्टि नहीं कर दे।

**दीपक कौशिक**
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

## उपनिषदध्ययनस्य शिक्षार्जनस्य वा महत्त्वम्

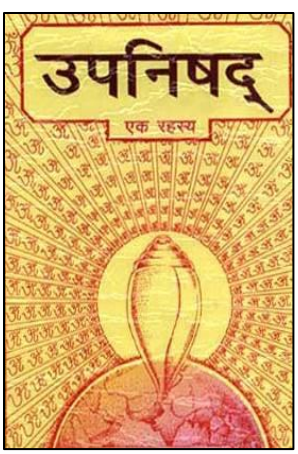


तैत्तिरीयोपनिषदि शिक्षार्जनविषयो मुख्यतया प्रतिपादितो वर्तते। तत्र स्वाध्यायप्रसङ्गे उल्लिखितमस्ति यत् –

"ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजापतिश्च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यमिति सत्यवचा राथीतरः। तप इति तपोनित्यः पौरुशिष्टिः। स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः। तद्धि तपस्तद्धि तपः॥" इति।

"भवन्तः ऋतम् अर्थात् सृष्टिनियमान् विज्ञानं वा पठन्तु पाठयन्तु च। स्वाध्यायः इत्युक्ते स्वयं पठनम्, प्रवचनमिति चेत् अन्येभ्यः पाठनमिति। तपसा सह पठन्तु पाठयन्तु च। तपः इत्युक्ते सात्त्विकश्रमः इति। इन्द्रियाणां निग्रहपूर्वकं पठन्तु पाठयन्तु च। शान्तिपूर्वकं पठन्तु पाठयन्तु च। अग्निं (शक्तिः - 'Power' अर्थात् भौतिक-विज्ञानम् एवम् 'इंजिनियरिंग') पठन्तु पाठयन्तु च। अग्निहोत्रं कुर्वन्तः पठन्तु पाठयन्तु च। अतिथीन् सेवमानाः पठन्तु पाठयन्तु च। मनुष्यमात्रस्य कल्याणं ध्यायन्तः पठन्तु पाठयन्तु च। प्रजानाम् अर्थात् सर्वसाधारणजनानां हितसाधनं कुर्वन्तः पठन्तु पाठयन्तु च। प्रजनः इत्यर्थात् सन्तानवृद्धिसमस्याः विचारयन्तः पठन्तु पाठयन्तु च। न केवलं मनुष्याणां हि अपितु पशुपक्षिवृक्षादीनाम् उत्पत्तिवर्धननियमोऽपि अत्र आयाति। स्वजातेः हितकामनया सह वर्धन्ताम्। राथीतराचार्यस्य मतं यत् सत्यभाषणम् उत्तमोत्तमं महत्त्वभूतञ्च आचरणमिति। न कदापि कैरपि सत्यभाषणं त्यजेयुः। पौरुशिष्टि-आचार्यस्य मतं यत् तपः मुख्यं वर्तते, अतः तपश्चर्या सम्यक् आचर्तव्या। मुद्गलाचार्यस्य शिष्यो नाकः स्वाध्याय-प्रवचनयोः विषययोरुपरि अत्यन्तं महत्त्वं प्रत्यपादयत्।" इति सरलार्थः।

**अनिल शास्त्री**
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

## स्वामी विवेकानन्दः

आधुनिकभारतस्य निर्माणकर्तृषु युगपुरुषविवेकानन्दस्य नाम सर्वोपरि अस्ति। स्वामिविवेकानन्दः न केवलं भारते अपितु सम्पूर्णविश्वे प्रसिद्धोऽस्ति । स्वामिविवेकानन्दस्य जन्म १८६३ तमवर्षेऽभवत्। तस्य पितुः नाम विश्वनाथदत्तः आसीत्। बाल्यकाले विवेकानन्दस्य नाम नरेन्द्रनाथः आसीत् । बाल्यकालादेव सः अति मेधावी आसीत् । स्वामिविवेकानन्दस्य आध्यात्मविषये महती रूचिः आसीत् । एषः उत्साही, हास्यप्रियः, करूणापरः च आसीत् । स्वीमिविवेकानन्दः शास्त्रीयसङ्गीतस्य अभ्यासं, प्रतिदिनं व्यायाम करोति स्म । स्वामिविवेकानन्दः पाश्चात्यदर्शन भारतीयदर्शनस्य च गम्भीरम् अध्ययनं कुर्वन् विश्वविद्यालयस्य स्नातकपदवीं स्वीकृतवान्। सन्यासदीक्षानन्तरं नरेन्द्रस्य नाम विवेकानन्दः इति अभवत् । स्वामिविवेकानन्दः यदा स्नातक करोति स्म तदा तस्य पिता दिवङ्गतः। १८९३ तमवर्षे अमेरिकादेशे शिकागो नाम नगरे विश्वधर्मसम्मेलमऽभवत्।

तस्मिन् सम्मेलने सः भारतस्य प्रतिनिधित्वम् अकरोत् । स्वामिविवेकानन्दः भारतभ्रमणं योगसाधनां च कृत्वा त्रिनवत्यधिकाष्टादशत तमवर्षे अमेरिकादेशस्य शिकागोनगरे विश्वधर्मसभायां भारतस्य गौरवं प्रतिष्ठापितवान् । तत्र सभास्थले विविध धर्मग्रन्थाः एकस्य उपरि एकः इति क्रमेण स्थापिताः आसन् । संयोगवशात् श्रीमद्भगवद्गीता सर्वेषां पुस्तकानाम् अधः आसीत् । एकः अमेरिकावासी उपहासपूर्वकम् अवदत्- स्वामिन् ! भवतां गीता सर्वेषां धर्मग्रन्थानां अधः वर्तते' इति । प्रत्युत्पन्नमतिः स्वामिविवेकानन्दः स्वामिविवेकानन्दः हसन्नमेव प्रत्यवदत् – आम् ! सत्यम्! आधारशिला तु अधः एव भवति। सा यदि बहिः स्वीक्रियेत् तर्हि समग्रम् अधः पतिष्यति । इति । विदेशेषु वेदान्तधर्मस्य प्रचारं कृत्वा भारतं प्रत्यागतः सः देशोद्धाराय युवकान् प्रेरितवान् । जनसेवा, स्वास्थ्य, स्त्रीशिक्षा, आधुनिकप्रौद्योगिकी प्रभृतिषु क्षेत्रेषु असाधारणं कार्यं कर्तुं रामकृष्णमिशन् इति संस्थां संस्थाप्य जनेषु शक्तिजागरणं कृतवान् । स्वामिविवेकानन्दस्य अयं सन्देशः अद्यापि भारतीयान् प्रेरयति- "उतिष्ठत्त जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्" ।

रजनी
संस्कृत पत्रकारिता

## चलचित्रम्

अस्मिन् संसारे सर्वेषु प्राणिषु मानवः खलु विवेकेन सर्वश्रेष्ठत्वं भजते। आविष्कारेषु चलचित्रमपि एकः उत्कृष्टः आविष्कारोऽस्ति। अनेन जनाः विश्रान्तिकाले मनोरञ्जनं कुर्वन्ति। अनेनाविष्कारेण शिक्षापि दीयते।

प्राचीनकाले भगवता ब्रह्मणा भरताचार्य प्रति मानवानां मनोरंजनार्थं श्रवणसुखदस्य नयनाभिरामस्य नाटकस्य उपदेशः प्रदत्तः । अनेनैव नाट्यशास्त्रे लिखितम् आचार्यभरतेन अस्मिन् विषये दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्। विश्रामजननं लोके नाट्यमेतद् भविष्यति ॥

प्रारम्भिके समये नाट्यस्य अस्य अभिनेयःजनैः अनेकैः मञ्चे क्रियतेस्म समाजे,किन्तु वैज्ञानिके युगेऽस्मिन् अस्य खलु नाटकस्य अभिनयः चलचित्रमाध्यमेन क्रियते । विधिरेषा अतीव लोकप्रिया अपि सजाता। नाट्यगृहे मञ्चनापेक्षया चलचित्रमाध्यमेन नाटकानांतेषां प्रदर्शनं सौख्यकरं उत्कृष्टं मनोरञ्जनकरं च वर्तते।

यदि वयं चलचित्रस्य आविष्कारविषये दृष्टिर्निक्षेपं कुर्मः, तर्हि ज्ञायते यत् सर्वप्रथम १८८९ ईस्वीये वर्षे श्रीमता एडसिसमहाभागेन अमेरिकादेशे मूकचलचित्रस्य आविष्कारः कृतः आसीत् । तदानीं चित्रेषु वाण्याभावो दृश्यते स्म,केवलं सङ्केतेनैव सर्वाणि पात्राणि स्व अभिप्रायं प्रकटयन्ति स्म। १९१२ ईस्वीये वर्षे भारतेऽपि मूकचलचित्रस्य निर्माणं सञ्जातं सफलतया । तदनन्तरं अनेकेषां वैज्ञानिकानां प्रयासेन मूकचलचित्रे ध्वनिरपि संयोजिता । ध्वनिसंयुक्तस्य चलचित्रस्यापि आविष्कारः अमेरिकानगरे अभवत् सर्वप्रथमम्, किन्तु भारतवर्षे एतत् १९२३ ईस्वीये वर्षे विनिर्मितम् आसीत्।

अस्माकं देशे प्रायः सर्वेषु नगरेषु ग्रामेषु च चलचित्रगृहाणां स्थितिः प्रतीयते । तत्र बहवः नागरिकाः चलचित्रं प्रतिदिनं पश्यन्ति। एकस्मिन् दिवसे प्रायः चतुःबार चलचित्रं चाल्यते चलचित्रगृहे। अनेन प्रकारेण अतीव लोकप्रियम् एतत् सञ्जातम् भारते मनोरंजनसाधनम्। अस्य कारणमिदं यत् चलचित्रेषु सर्वेषु नृत्य-गीत-वाद्य-हास्यअभिनय-सग्रामादयः सर्वेऽपि क्रियाकलापाः यथार्थरूपेण प्रदर्श्यन्ते। अनेनैव अद्यत्वे एतत् मनोरंजनसाधनेषु महत्त्वपूर्ण सञ्जातम्। अस्य आविष्कारस्यानन्तरं नाट्यगृहेषु नाटकानां अभिनयं प्रति जानानां अरुचिः सञ्जाता।

चलचित्रमिदं न केवलं मनोरञ्जनाय,अपितु शिक्षायाः प्रचाराय प्रसाराय चापि कल्पते। अधुना सर्वकारेण अनेन माध्यमेन शिक्षायाः प्रसारः क्रियते। एवमेव सूचनाविभागेषु सूचनायाः प्रसारणार्थम् अपि अस्य साधनस्य उपयोगो भवति। स्वास्थ्यविभागोऽपि अस्मिन् विषये विशेष-प्रयत्नवान् दृश्यते।

किन्तु प्रसंगेऽस्मिन् चिन्तायाः एकः विषयोऽस्ति। यत् केचित् जनाः अधिकंधनार्जनं करणाय चलचित्रगृहेषु अश्लीलचित्राणां प्रदर्शनं कुर्वन्ति । तेषु चित्रेषु बहूनि तु नग्नानि एव भवन्ति । ईदृशानि लज्जाकराणि चित्राणि अवलोक्य अस्माकं देशस्य निर्मातारः युवकाः कुमार्गगामिनः भवन्ति । ईदृशान् दृश्यान् विलोक्य अल्पमतिबालकाः चरित्रभ्रष्टाः जायन्ते। तेषां चरित्रस्य संरक्षणम् अस्माकं महत् कर्तव्यम्। अतः सर्वकारेण प्रयत्नो विधेयः यत् , अस्मिन् विषये अश्लीलचित्राणां प्रदर्शनं केनापि प्रकारेण चलचित्रगृहेषु, चलचित्रेषु वा न स्यात्। तदैव अस्य आविष्कारस्य सम्यक्रूपेण लाभः भविष्यति।

शीतल
संस्कृत पत्रकारिता

## भारतीय संस्कृति की पहचान

गायत्री गंगा, गीता, गौ, सब सद्गति की खान हैं,
ये महान भारत की संस्कृति की सच्ची पहचान हैं।

गायत्री परमेश्वर की संकल्पशक्ति की धार है,
सकल सृष्टि में चेतनता का उससे हुआ उभार है,
जो भी श्रद्धा से जुड़ जाता है इस चेतन धार से,
सदा सुरक्षित रहता है वह युग के कठिन प्रहार से,

हो जाते साकार सहज ही उसके सब अनुमान हैं,
ये महान भारत की संस्कृति की सच्ची पहचान हैं।

गंगा केवल नीर नहीं है, यह ममता साकार है,
इसकी बूंद-बूंद में रहता जननी जैसा प्यार है,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभी का गंगाजल में वास है,
जीवन, पोषण, अनुशासन का गंगा में उल्लास है,

सुख-समृद्धि पाते, जो देते गंगा को सम्मान हैं,
ये महान भारत की संस्कृति की सच्ची पहचान हैं।

उपनिषदों को कहा गया है उद्गम अनुसंधान का,
उनमें से प्रत्येक स्त्रोत है ज्ञान और विज्ञान का,
उनको गौ-सा दूहा कृष्ण ने, मंथन किया पुनीत है,
मंथन से निकली गीता ही वह अनुपम नवनीत है,

इसके सेवन से बन जाते साधक प्रज्ञावान हैं,
ये महान भारत की संस्कृति की सच्ची पहचान हैं।

गौ की हर प्रवृत्ति प्रेरक होती देवत्व-विकास की,
है प्रतीक परमार्थ और अपनेपन के आभास की,
धरती को उर्वरता देतीं, मानव को आरोग्य हैं,
यूँ सद्गुण-संवर्द्धन करतीं, बनते मनुज सुयोग्य हैं,

मानव का ही नहीं, प्रकृति का भी करती कल्याण हैं।
ये महान भारत की संस्कृति की सच्ची पहचान हैं।

अन्जू (आचार्य साहित्य)

## गणतंत्र दिवस

**रत्नाकरधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम्।**
**ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्याम वन्देभारतमातम्॥**

जिनके पैर समुद्र द्वारा धोए जाते हैं और जो हिमालय से सुशोभित हैं, वह जो कई ब्रह्मऋषियों और राजऋषियों से भरा है। ऐसी मेरी भारत माता को अभिवन्दन।

**गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।**
**स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥**

देवगण भी यह गान करते हैं कि जिन्होंने भारतवर्ष में जन्म लिया है, जो कि स्वर्ग और मोक्ष का मार्ग है, वे पुरुष हम देवताओं से भी अधिक धन्य हैं।

**भारतीया वयम् भारतीया वयम्।**
**भारतं मे प्रियं राजते भूतले**
**यस्य दिव्यं यशः कोविदैर्गीयते।**
**मानवानां कृते यत् कृतं भारते**
**तन्न सत्यं क्वचिद् दृश्यते भूतले॥**

हम सभी भारतीय हैं, हम सब भारतीय हैं। मेरा प्रिय भारत सम्पूर्ण संसार में सुशोभित है। जिसके दिव्य यश का गीत प्रकांड विद्वानों के द्वारा गाया जाता है। भारत में जो मानवता का रूप दिखाई देता है वह सत्य संसार में कहीं भी नहीं दिखाई देता है।

नीलम (आचार्य)

## श्रीशिवस्तोत्रम् –

### स्वामी विवेकानन्दविरचितम्

निखिलभुवनजन्मस्थमभङ्गप्ररोहाः
अकलितमहिमानः कल्पिता यत्र तस्मिन्।
सुविमलगगनाभे ईशसंस्थेऽप्यनीशे
मम भवतु भवेऽस्मिन् भासुरो भावबन्धः ।।

निहतनिखिलमोहेऽधीशता यत्र रूढा
प्रकटितपरप्रेम्ना यो महादेव संज्ञः।
अशिथिलपरिरम्भः प्रेमरूपस्य यस्य
प्रणयति हृदि विश्वं व्याजमात्रं विभुत्वम् ।।

वहति विपुलवातः पूर्व संस्काररूपः
प्रमथति बलवृंदं घूर्णितिवोर्मिमाला।
प्रचलति खलु युग्मं युष्मदस्मत्प्रतीतम्
अतिविकलितरूपं नौमि चित्तं शिवस्थम् ॥

जनकजनितभावो वृत्तयः संस्कृताश्च
अगणनबहुरूपा यत्र एको यथार्थः।
शमितविकृतवाते यत्र नांतर्बहिश्च
तमहह हरमौडे चित्तवृत्तेर्निरोधम् ॥

गलिततिमिरमालः शुभ्रतेजः प्रकाशः
धवलकमलशोभः ज्ञानपुञ्जाट्टहासः।
यमिजनहृदिगम्यः निष्कलं ध्यायमानः
प्रणतमवतु मं सः मानसो राजहंसः ।।

दुरितदलनदक्षं दक्षजादत्तदोषम्
कलितकलिकलङ्कं कम्रकल्हारकांतम्।
परहितकरणाय प्राणविच्छेदसूत्कम्
नतनयननियुक्तं नीलकंठं नमामः ॥

**ज्योति**
**हिन्दू अध्ययन**

## सुभाष चन्द्र बोस

वो भी तो खुश रह सकता था
महलों और चौबारों में
उसको लेकिन क्या लेना था
तख्तों - ताज - मीनारों से ?
वो था सुभाष, वो था सुभाष

अपनी मां बंधन में थी जब
कैसे वो सुख से रह पाता
रणदेवी के चरणों में फिर
क्यों न जाकर शीश चढाता ?
अपना सुभाष, अपना सुभाष

डाल बदन पर मोटी खाकी
क्यो न दुश्मन से भिड़ जाता
'जय हिंद' का नारा देकर
क्यों न अजर-अमर हो जाता ?
नेता सुभाष, नेता सुभाष

जीवन अपना दांव लगाकर
दुश्मन सारे खूब छकाकर
कहां गया वो, कहां गया वो
जीवन संगी सब बिसराकर ?
तेरा सुभाष, मेरा सुभाष
मैं तुमको आज़ादी दूंगा
लेकिन उसका मोल भी लूंगा
खूंन बदले आजादी दूंगा
बोलो सब तैयार हो क्या ?
गरजा सुभाष, बरसा सुभाष

वो था सुभाष, अपना सुभाष
नेता सुभाष, बाबू सुभाष
तेरा सुभाष, मेरा सुभाष
अपना सुभाष, अपना सुभाष।

**डॉ. महावीर**
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

## कहानी कर्ण की

पांडवो को तुम रखो, मैं कौरवों की भीड से
तिलक शिकस्त के बीच में, जो टूटे ना वो रीड़ मैं
सूरज का अंश होके, फिर भी हूँ अछूत मैं
आर्यव्रत को जीत ले, ऐसा हूँ सूत पूत मैं
कुंती पुत्र हुँ मगर न हूँ, उसी को प्रिय मैं
इंद्र मांगे भीख जिससे, ऐसा हूँ क्षत्रिय मैं

आओ मैं बताऊँ, महाभारत के सारे पात्र ये
भोले की सारी लीला थी, किशन के हाथ सूत्र थे
बलशाली बताया जिसे, सारे राजपुत्र थे
काबिल दिखाया बस, लोगो को ऊँची गोत्र के
सोने को पिघलाकर, डाला सोन तेरे कंठ में
नीची जाती का होके, किया वेद का पठंतुने

यही था गुनाह तेरा, तु सारथी का अंश था
तो क्यो छिपे मेरे पीछे, मैं भी उसी का वंश था
ऊँच नीच की ये जड़, वो अहंकारी द्रोण था
वीरो की उसकी सूची में, अर्जुन के सिवा कौन था
माना था माधव को वीर, तो क्यो डरा एकलव्य से
माँग के अंगूठा, क्यों जताया पार्थ भव्य है

रथ पे सजाया जिसने, कृष्ण हनुमान को
योद्धाओं के युद्ध में, लडाया भगवान को
नन्दलाल तेरी ढाल पीछे, अंजनेय थे
नीयती कठोर थी, जो दोनों वंदनीय थे
ऊँचे ऊँचे लोगो में, मैं ठहरा छोटी जात का
खुद से ही अंजान मैं, ना घर का ना घाट का

सोने सा था तन मेरा, अभेद्य मेरा अंग था
कर्ण का कुंडल चमका, लाल नीले रंग का
इतिहास साक्ष्य है, योद्धा मैं निपूण था
बस एक मजबूरी थी, मैं वचनों का शौकीन था
अगर ना दिया होता वचन, वो मैने कुंती माता को
पांडवो के खून से, मैं धोता अपने हाथ को

साम दाम दंड भेद, सूत्र मेरे नाम का
गंगा माँ का लाडला, मैं खामखां बदनाम था
कौरवों से हो के भी, कोई कर्ण को ना भूलेगा
जाना जिसने मेरा दुख, वो कर्ण कर्ण बोलेगा
भास्कर पिता मेरे, हर किरण मेरा स्वर्ण है
वर्ण मे अशोक मैं, तू तो खाली पर्ण है

कुरुक्षेत्र की उस मिट्टी में, मेरा भी लहू जीर्ण है
देख छानके उस मिट्टी को, कण कण में कर्ण है

**मुकेश कौशिक**
लिपिक (शोध एवं प्रकाशन विभाग)

## योगम्प्रति ममानुभवः

अहमद्य भवता साकन्निजानुभवम्प्रकटीकरोमि यद्योगः कः?यन्मयानुभवङ्कृतन्निजाष्टवर्षीयोऽनुभवे योगः कला वर्तते, दिव्यशक्तिर्वर्तते यया वयन्निजशरीरे यात्राङ्कुर्मः।

तथा यदा वयं यात्रां कुर्वन्तस्स्मः कस्मिन्नपि स्थानं गन्तुं तदा पथि दृश्यमानानां वस्तूनाम्परिचयङ्गीकुर्मः यथा वयङ्कपिस्थलतो देहल्याम्प्रति गच्छामःतर्हि सुनिश्चितम्भवति आगन्ता स्थानविषये जानीमःतथैवं हि स्वयम्प्रभृतिःस्वयंयावद्या यात्रा भवति तां योगःकथ्यते।

यदा वयं स्वयं निजशरीरयात्रायाम्प्रतिगच्छामस्तर्हि अस्मान्निजशरीरावयवानामस्थिनामिन्द्रियानामवस्थानाज्ज्ञानम्भवति।यस्माज्ज्ञायते यदस्माकमन्तो रोगाःकथञ्जायन्ते ? तथा कथमुपचाराःभविष्यन्ति:। अस्माकम्मानसिकावस्थाः, शारीरिकशक्तयःविकसिताःभवन्ति।

अस्मान्प्रत्येकावस्थानाज्ज्ञानम्भवति । यदापि मम शरीरे मम शरीरे किञ्चिदपि परिवर्तनम्भवति तदा तस्याःप्रक्रियोपरि का प्रतिक्रियावश्यकी भवति तस्याः ज्ञानमपि सद्य भवति । भवद्भिस्सर्वैरपि योगः कर्तव्यःतथानन्दानुभूतिमङ्गीकुर्वन्निजदेहे यात्राङ्कुर्वन्तु। सर्वदा प्रत्येकावस्थायाःज्ञानमत्यन्तमावश्यकी वर्तते।

भवन्तःसर्वे स्वस्योपचारविषये स्वयन्दक्षाःभवेयुःतथा स्वस्थतायुताप्यानन्दयुतजीवनमङ्गीकर्तुं समर्थाःभवेयुः।

विष्णु (शास्त्री योग)

## बसंत आया

देखो देखो बसंत आया है
साथ अपने बहार लाया है

पेड़ पौधों के पत्तों ने गिरना छोड़ दिया
बड़े बुजुर्गों ने सर्दी से ठिठुरना छोड़ दिया
ओस ने भी दोपहर तक बिखरना छोड़ दिया
सूर्यदेव ने भी अवकाश करना छोड़ दिया
बच्चों ने आकाश में पतंग उड़ाया है
देखो देखो बसंत आया है
साथ अपने बहार लाया है

छोटे बड़े वृक्षों पर हरियाली छाई है
नई-नई कोमल कोमल लालिमा आई है
फूलों ने भी आज ली अंगड़ाई है
आम सरसों भी अब महकाई है
फलों में अब रस भर आया है
देखो देखो वसंत आया है

चिड़िया भी झुंड से चहकाने लगी है
कोयल भी मधुर स्वर गाने लगी है
मैना तोते के संग बेर खाने लगी है
प्रकृति भी निज ओर लुभाने लगी है
मोर ने भी अपना नृत्य दिखाया है
देखो देखो देखो पसंद आया है
साथ अपने बहार लाया है

**प्यारे लाल**
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)